

फूल सींगार ( १६० )

फूलों की अजब बहार री बना बंगला साई का।  
भई है सुगंधि अपार री बना बंगला साई का॥

राबेल और कंद की कलियां

सुविधि गूंथी है नेह भरी अलियां  
फूले हैं हार सींगार री बना बंगला साई का॥

जाही जूही पीत चमेली लौंग लता और माधवी बेली  
मोलिए महक मनठार री बना बंगला साई का॥

केले के खम्भा सुन्दर सुहाए पाटिल पुष्प है बीच लगाए  
गंध मादन गुलज़ार री बना बंगला साई का॥

फूल से कोमल साई प्यारे इन्दीवर से नैन रत्नारे  
गोद युगल सरकार री बना बंगला साई का॥

बाज साई की झांकी न्यार नैन प्राणन को लागत प्यारी  
उपमा न कोऊ संसार री बना बंगला साई का॥

नेह नगर के नर पति साई परा प्रेम में विहरें सदाई  
शील स्नेह सुकुमार री बना बंगला साई का॥

जंह तंह छायो जस को वितान मैगसि चंद्र की महिमा  
महान

जाऊं चरणनि बलहार री बना बंगला साई का॥